B.Ed.part =1,paper 1,Topic: शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives of Education)

प्रस्तुत अध्याय में सबसे पहले शिक्षा के उद्देश्यों को भली-भाँत स्पष्ट किया गया है । आप शिक्षा के महत्त्व तथा शिक्षा का आवश्यकता को जान चुके हैं ,परन्तु इसका निर्धारण के लिए शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करना आवश्यक है । शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण का आधार ही इसकी आवश्यकता एवं महत्व को निश्चित करती है । शिक्षा के उद्देश्यों का आधार निर्धारित करते समय जिन बातो का ख्याल रखा जाना चाहिए है तथा शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति करने के साथ वैयक्तिक तथा सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयासो को जानेंगे । हम शिक्षा के वैयक्तिक तथा सामाजिक उद्देश्यो के अलावा शिक्षा के अन्य उद्देश्यों यथा जनतांत्रिक देश की शिक्षा के उद्देश्य को भी जानेंगे और यह भी जानेंगे कि इनकी पूर्ति करते समय शिक्षा के किन पहलुओं का ध्यान रखा जाता है।

इस प्रकार प्रस्तुत पाठ के अध्ययन से शिक्षा के उद्देश्यों की सम्पूर्ण जानकारी पाठकों को प्राप्त हो सकेगी।

4.**1 शिक्षा के लक्ष्य/उद्देश्यों का महत्व (Importance of Aims/Objectives of Education) मानव** जीवन को सफल बनाने के लिए यदि शिक्षा आवश्यक है तो शिक्षा को लोगों के मापदण्डों पर खडा उतरने के लिए शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करना आवश्यक है। उद्देश्य एक पूर्वनिर्धारित लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता है तथा व्यवहार को भी प्रेरित करता है। बिना उद्देश्य के हम जीवन के किसी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते हैं। हम प्राकृतिक बालक तथा प्रगतिशील एवं विकसित समाज को आवश्यकताओं तथा आदशों के बीच को खाई को पाट सकते हैं। मनुष्य जीवन में जो भी प्राप्त करना चाहता है, उसकी आदर्श स्थिति को उद्देश्य कहते हैं। यह आदर्श स्थिति किसी सीमा में नहीं बाँधी जा सकती है। शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करने के पहले हमे उद्देश्य शब्द का अर्थ जानना चाहिए । उद्देश्य शब्द उत्त तथा दिशा दो शब्दों के योग से बना है। उत्त का अर्थ है ऊपर को ओर। अत: उद्देश्य कपर दिशा में बढ़ने का संकेत है। उच्च दिशा आदर्श स्थिति का परिचायक है तथा उसकी कोई नहीं होती है। and Objectives of Education)यह आदर्श स्थिति किसी समा गे न शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे। उद्देश्य शब्द उत्त तथा दिशा दो शब्दों के योग से बना है। उत्त का अर्थ है ऊपर की ओर ! अत: उद्देश्य ऊपर दिशा में बढ़ने का संकेत है। उच्च दिशा आदर्श स्थिति का परिचायक है तथा उसकी कोई सीमा नहीं होती है।

चुकी शिक्षा समाज की आधारशिला है। अत: समाज में जैसी शिक्षा व्यवस्था की जाएगी, वैसे ही समाज का निर्माण होगा। अत: शिक्षा के उद्देश्यों को समाज के अनुकूल होना अतिआवश्यक है। इसी आधार पर विभिन्न कालों में, विभिन्न देशों के विचारको ने शिक्षा के अलग-अलग उद्देश्यों का निर्धारण किया था; जैसे-प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना था । यूनानी दार्शनिकों ने शिक्षा के नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक उद्देश्यों को निर्धारित किया था। मध्यकालीन यूरोप में शिक्षा का उद्देश्य-मृत्यु के बाद जीवन की तैयारी करना था, जबकि आधुनिक यूरोप शिक्षा के इस उद्देश्य में विश्वास नहीं करता है। अर्थात् शिक्षा का उद्देश्य समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं तथा आदर्शों को दृष्टि में रखते हुए उदेश्यों का निर्धारण करना है।

4.**2 शिक्षा के लक्ष्यों/उद्देश्यों की आवश्यकता (Needs of Educational Aims/Objectives) जब शिक्षा के** उद्देश्यों का निर्धारण होता है तब इसे प्राप्त करने के लिए हम दृढ़ संकल्प हो, पूरी एकाग्रता से कार्य प्रारम्भ कर देते हैं। उद्देश्य हमें शिक्षण पद्धतियों के प्रयोग करने, साधनों का चयन करने, उचित पाठ्यक्रम की रचना करने तथा परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करने में भी सहायता करता है।

(I) शैक्षिक प्रक्रियाओं को दिशा प्रदान करता है ।
(ii) उद्देश्यों को प्राप्ति के लिए अध्येताओं को प्रेरित करता है, तथा (iii) शैक्षिक प्रक्रिया के मूल्यांकन करने के लिए मापदंडों का निर्धारण करता है।

यदि हम शिक्षा के उद्देश्यों का वर्गीकरण (Classification of Aims of Education) करें, तो यह मुख्यतः चार प्रकार का होता है -

(i) विशिष्ट उद्देश्य (Specific Aim)
(ii) सार्वभौमिक उद्देश्य (Universal Aim)
(iii) वैयक्तिक उद्देश्य (Individual-Aim)
(iv) सामाजिक उद्देश्य (Social Aim)

(i) विशिष्ट उद्देश्य (Specific.Aim) विशिष्ट उद्देश्यों, सामान्य उद्देश्यों से भिन्न होता है ।इनका निर्माण विशेष परिस्थिति तथा विशेष कार्य को ध्यान में रखकर किया जाता है ।इसके उद्देश्य लचीले, अनुकूल तथा परिवर्तनशील होते हैं।
(ii) सार्वभौमिक उद्देश्य (Universal Aim) यह उद्देश्य सम्पूर्ण मानव जाति पर सामान्य रूप से है। ये उद्देश्य सनातन, निश्चित तथा परिवर्तनशील होते हैं। इसके अन्तर्गत मानव के व्यक्तित्व का संगठन शारीरिक तथा मानसिक विकास, समाज की प्रगति, प्रेम तथा अहिंसा आदि सार्वभौमिक उद्देश्य आते हैं ।
(iii) वैयक्तिक उद्देश्य (Individual Aim)-वैयक्तिक उद्देश्य व्यक्ति की व्यक्तिगत शक्तियों के पूर्ण विकास का समर्थन करती है।
(iv) सामाजिक उद्देश्य (Social)-इसके अन्तर्गत सामाजिक उद्देश्य पर विशेष बल दिया जाता है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अत: उसका विकास समाज में रहकर ही संभव है।

4.3 शिक्षा के लक्ष्यों/उद्देश्यों के निर्माण का आधार (Base of the Formulation of Education Aims/Objectives)

शिक्षा के उपरोक्त उद्देश्य इस ओर इंगित करते है कि शिक्षा के उद्देश्यों से संबंध होता है ।यह देश काल के सापेक्ष होता है । इसका संबंध स्थान विशेष, समाज विशेष तथा समय विशेष से होता है । 'मूल्य ' (Value) भी शिक्षा के उद्देश्य होते हैं, जिसमें समय तथा स्थान के अनुसार भिन्नता मिलती है। ये भिन्नता उद्देश्यों में भी परिलक्षित होती है।

शिक्षा के उद्देश्य किसी समाज के आदर्शों, मूल्यों, आवश्यकताओं तथा इच्छाओं को दर्शाती है । ये उद्देश्य शैक्षिक प्रक्रिया के आदर्शों तथा मूल्यों को निर्धारित करने वाले जीवन दर्शन को आधार बनाते हैं । आध्यात्मिक को महत्त्व देने वाला समाज शैक्षिक प्रक्रिया में भी आध्यात्मिकता पर ही बल देगा। समाजवादी जीवन पद्धति को मूल्यवान समझनेवाला समाज अपने नागरिकों में समाजवादी मूल्य ही विकसित करना चाहेगा। उपरोक्त बातें हमें यह बताती है कि दर्शन तथा सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य मुख्य रूप से शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करने में मुख्य भूमिका निभाती है । इसके अलावा किसी समाज का भौतिक व वातावरणीय आवश्यकताएँ भो शिक्षा के उद्देश्यों का आधार बनाते हैं । आधुनिक मानव ने अपने प्रयोगों तथा खोजों के आधार पर प्रकृति को गंभीर क्षति पहुंचाई है तथा इन समस्याओं को पूर्ण अथवा आंशिक समाधान ढूढना भी शिक्षा का उद्देश्य बन चुका है। उपरोक्त बातों पर सुविधा के अनुसार सूक्ष्म बातों पर प्रकाश डालने के लिए बाँटे ,तो यह दो भागों में बंट जाती है-
(i) आदर्शवादी आधार (Idealistic Basis) (ii) यथार्थवादी आधार (Realistic basis)

(i) **आदर्शवादी आधार (Idealistic Basis)** आदर्शवादी सार्वभौमिक मूल्यों और आदर्शों सबसे ऊँचा स्थान देते हैं। अत: आदर्शवादी समाज में शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य सार्वभौमिक मूल्यों और आदशों की प्राप्ति है। इनका निर्माण सभी व्यक्तियों के हित को ध्यान में रखकर किया जाता है। आदर्शवादी दर्शन के अनुसार अन्तिम सत्ता आध्यात्मिक है तथा भौतिक जगत नाशवान है। अत: वे भौतिक तत्त्वों की अपेक्षा विचारों को महत्त्व देते हैं। आदर्शवादी सत्यं , शिवं, सुन्दरम् के चिरन्तन मूल्यों को प्रतिपादित करता है। इनका पूर्ण ज्ञान होने से मानव मोक्ष को प्राप्त करता है।

आदर्शवादी समाज शिक्षा की व्यवस्था व्यक्ति से सामान्य विकास के लिए करती है । यह मानव-गुणो का विकास करती है। यह समाज के प्रगति के साथ-साथ व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी बल देती है । यह संस्कृति की सुरक्षा और उसकी प्रगति में भी भूमिका निभाती है।

उपरोक्त बातों को आधार बनाकर शिक्षा का उद्देश्य निर्धारित किया जाता है।

(ii)यथार्थवादी आधार (Realistic Basis)-यह आदर्शवादी विचारधारा के विपरीत विचारधारा है। इसमें समाज को भौतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। ये भौतिक परिस्थितियाँ हैं -

(**i) जीवन दर्शन (Philosophy of** Life)-जीवन दर्शन, जीवन के लक्ष्य को प्रभावित करता है। समाज के लोग जिस जीवन-दर्शन से प्रभावित होते हैं, उसका प्रभाव शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण पर पड़ता है। जिस व्यक्ति का जीवन दर्शन आध्यात्मिक रूप से उन्नत होता है, उसकी शिक्षा चरित्रगत तथा नैतिक उद्देश्य पर बल देती है। जिस व्यक्ति का जीवन-दर्शन बाह्य जगत से प्रभावित रहता है, उसके शिक्षा का उद्देश्य जीवन को सुखो बनाना होगा।

(**ii) राजनीतिक आधार (Political Basis)शिक्षा का इतिहास देखने से पता चलता है कि शिक्षा पर सबसे ज्यादा** प्रभाव राज्य एवं शासक वर्ग ने डाला है। समाज को शासन प्रणाली शिक्षा के उदेश्यों का निर्धारण करती है। प्राचीन काल से हो राष्ट्रों और देशों ने अपनी विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था तथा अपनी राजतंत्र के पालन के लिए माध्यम के रूप में शिक्षा का उपयोग किया है। समाजवादी राज्य के रूप में चीन, भूतकालीन सोवितप रूप आदि राज्यों ने अपनी शिक्षा व्यवस्था को बनाए रखा । वहीं भारत, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि देशों ने उदारवादी लोकतंत्र को अपनाया तथा उसी के अनुरूप अपनी शिक्षा व्यवस्था को विकसित किया, जिसमें व्यक्तियों का लोकतान्त्रिक प्रक्रियाओं में पर्याप्त भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

(**iii) आर्थिक आधार (Economical Basis)** समाज की अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक स्थिति भी उनके शिक्षा के उद्देश्यों का निश्चित करती है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न समाज के शिक्षा के उद्देश्य व्यापक होते हैं। जबकि निर्धन समाज में तो शिक्षा की व्यवस्था भी ठीक प्रकार से नहीं हो पाती है ।

(**iv) समाजशास्वीय आधार (Sociological Basis)-समाज** के दर्शन तथा उनकी जीवनशैली का भी शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रभाव पड़ता है। समाज की संरचना, उसकी संस्कृति तथा समाज की धार्मिक स्थिति उसके शिक्षा के स्वरूप को निश्चित करती है। जिस समाज में स्त्री-पुरुषों में भेद किया जाता है, उस समाज मे स्त्रीयो को पढ़ने लिखने भर की शिक्षा दी जाती है और जिस समाज में स्त्री-पुरुष में भेद नहीं किया जाता है, वहाँ स्त्रियो-पुरुषों की शिक्षा का उद्देश्य समान होते हैं ।

संस्कृति समाज की शिक्षा का आधार होती है। इसके अनुसार समाज का रहन-सहन, खान-पान, शादी-विवाह, रीति-रिवाज, भाषा एवं साहित्य, धर्म-दर्शन आदि सब रहते हैं। इस विधि से समाज अपनी संस्कृति आनेवाली पीढ़ी को हस्तान्तरित करती है।

(**1) वैज्ञानिक आधार (Scientific Basis)** आज विज्ञान के युग में प्रौद्योगिकी (Technology) शिक्षा के आधारों को निर्धारित करने का आधार बन चुकी है। आज अधिकांश देशों का उद्देश्य विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की शिक्षा देना हो सकता है। आज यदि भौतिक जीवन सुरक्षित नहीं हो ,तो हम आध्यात्मिकता की बात नहीं कर सकते । आज प्रत्येक समाज को विज्ञान तथा तकनीकी प्रभावित कर रहे हैं।

इन उद्देश्यों के बारे में "माध्यमिक शिक्षा आयोग" ने अपना विचार इन शब्दों में व्यक्त किया है-"छात्रों को इस प्रकार का चारित्रिक प्रशिक्षण दिया जाय कि वे नागरिक के रूप में भावी प्रजातांत्रिक सामाजिक व्यवस्था में रचनात्मक ढंग से भाग ले सके और उनकी व्यावहारिक तथा व्यावसायिक कुशलता में उन्नति की जाय, जिससे कि वे अपने देश की आर्थिक प्रगति करने में अपना योग दे सकें।"

व्यवहार रूप में विशिष्ट शैक्षिक कार्यक्रमो,, जैसे विभिन्न स्तरो की विद्यालयी शिक्षा ,विशेष व्यवसायिक या सम-व्यवसायिक पाठ्यक्रम के उद्देश्य राज्य द्वारा स्थापित आयोग अथवा समिति द्वारा अनुशंसित किए जाते हैं । भारत में में विश्वविद्यालय आयोग (1948-1949), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53)शिक्षा आयोग (1964-66),श्री प्रकाश सार्मि (1959), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), यशपाल कमेटी इत्यादि इसके उदाहरण हैं। शिक्षा के उद्देश्य, समाज अथवा राष्ट्र की एक प्रक्रिया के विभिन्न पक्षों व स्तरों की अपेकषाओं को भी प्रतिबिम्बित करते है।

4,**4 शिक्षा का व्यक्तिगत तथा सामाजिक लक्ष्य (Individul and Social Aim of Education**)- प्राचीन काल से ही विद्वानों के समक्ष यह प्रश्न विचारणीय रहा है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिगत हो अथवा सामाजिक । कुछ विद्वानों ने व्यक्तिगत विकास के उद्देश्यों का पक्ष लिया है तो कुछ विद्वानों ने समाज को ध्यान में रखकर शिक्षा का उद्देश्य निर्धारित किया है। शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों ने तीव्र विवाद को जन्म दिया है , जिसके तीन मुख्य अंश है -

(i) शिक्षा को अच्छे व्यक्तियो का निर्माण करना चाहिए या नागरिकों का ?

(ii) शिक्षा को व्यक्ति की आवश्यकताए पूरी करनी चाहिए या समाज की ?
(iii) शिक्षा पर व्यक्ति का प्रथम अधिकार होना चाहिए या समाज का?
अतः यह कहना कठिन है कि व्यक्तिक या सामाजिक उद्देश्यों में विरोध है या समन्वय। शिक्षा संबंधी सभी उद्देश्य प्रायः इन्हीं दोनों उद्देश्यों में से किसी एक पर बल देते हैं। प्रश्न यह उठता है कि क्या शिक्षा के इन दोनो उद्देश्यों में समन्वय स्थापित किया जा सकता है अथवा नहीं। यह अन्तर कंवल बल देने का है तो इन दोनों उद्देश्यों के बीच समन्वय में कोई कठिनाई नहीं होगी । परन्तु, इसके लिए हमें निष्पक्ष रूप से दोनों पक्षों का व्यापक तथा संकुचित रूपों का अध्ययन करना होगा।

4.**5 शिक्षा का वैयक्तिक लक्ष्य/उद्देश्य (Individual Aims / Objectives of Education) जिस विचारधारा के अन्तर्गत व्यक्तिगत उद्देश्यों पर बल** दिया जाता है, उसमे समाज की अपेक्षा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण समझा गया है । इस विचार के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति जैविक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से एक-दूसरे से अलग तथा अद्वितीय होता है । हालांकि व्यक्तिगत विकास का भी दर्शनों के अनुसार अर्थ होता है ।जैसे-आदर्शवादी (Idealistic)शिक्षा का अंतिम उद्देश्य व्यक्ति को आत्मानुभूति करने योग्य बनाना होता है ।इसमें बालकों के शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास पर बल देते हैं ।परंतु, सबो का अंतिम लक्ष्य आत्मानुभूति तथा मोक्ष ही होता है ।

वहों प्रकृतिवादो (Naturalism) के अनुसार, व्यक्तिक विकास के अंतर्गत व्यक्ति के मूल प्रवृत्तियों के साथ विकास की पूर्ण स्वतंत्रता रहती है। यह व्यक्ति के भावों को महत्व व स्वतंत्रता देता है। मनोविश्लेषणवादी भी

आत्म विकास के महत्व को स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार आत्म-विकास मनुष्य के सर्वांगीण विकास में मदद करता है, जो मनुष्य को अच्छा बनने में मदद करता है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति रुचि, रूझान एवं आवश्यकता में एक दूसरे से अलग होते है तथा शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को रुचि तथा आवश्यकाओं को ध्यान में रखकर शिक्षा देना है। शिक्षा के क्षेत्र में पेस्ट्रोलॉजी ने इस बात की चर्चा सबसे पहले की थी और अब प्रत्येक व्यक्ति इस बात को स्वीकार करता है। यहाँ तक को लोकतंत्रवादी भी वैयक्तिक विकास का यही अर्थ निकालते हैं। सामाजिक दृष्टि से (i) व्यक्ति अपने हित के लिए समाज का निर्माण करता है । अतः शिक्षा को व्यक्ति के विकास में सहायक होना चाहिए. (ii) व्यक्ति समाज की एक इकाई है, व्यक्ति के विकास में समाज का भी विकास होता है. (iii) संसार कई तरह के लोगों से बना है।यदि संसार के सभी व्यक्ति एक हो जाएंगे, तो उसमें नवीनता नहीं रह जाएगौ अत: व्यक्ति के विकास पर ध्यान देना चाहिए ।

वैयक्तिक विकास की चर्चा के बाद सामाजिक विकास को जानेगे; क्योकि व्यक्ति का विकास समाज में हो सम्भव है ।

4.**6 शिक्षा का सामाजिक लक्ष्य (Social Aims of Education)** - जो लोग व्यक्ति की अपेक्षा समाज को महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं, उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक भावना का विकास करना होना चाहिए । विभिन्न विद्वानों ने सामाजिक विकास की सीमाएँ अपने-अपने दृष्टिकोण से निश्चित की है। प्रत्येक मानव एक सामाजिक प्राणी है और कोई भी मानव अपने-आप में अकेला नहीं है।

आदर्शवादी मानते हैं कि आत्मा सभी में समान रूप में विद्यमान है। इनके अनुसार पूरा संसार एक परिवार है और हम उसके सदस्य हैं।

अधिक उदारवादी विचारधारा के अनुसार, व्यक्तियों में सामाजिक गुण डालना, व्यक्तियों के सामाजिक दायित्व व सामाजिक भूमिका के निर्वहन के लिए तैयार करना, व्यक्तियों की सामाजिक कुशलता को बढ़ावा देना और ऐसे व्यक्तियों द्वारा समाज के सृजन में योगदान देना है। अति उदारवादी विचारधारा के अन्तर्गत सामाजिक उद्देश्य का उग्र रूप दृष्टिगत होता है। इस प्रकार के उग्र या चरम रूपों का उदाहरण प्राचीन स्पार्टा , हिटलर के समय जर्मनी आदि है।

मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि मनुष्यों में सामूहिकता की प्रवृत्ति होती है । व्यक्ति का सामूहिक जीवन सामाजिक दृष्टि से तभी सफल हो सकता है, जब उस के सभी सदस्यों की सुविधा का ध्यान रखा जाए। अपने समाज के लोगों से प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, दया, क्षमा, सहनशीलता आदि की भावना रखना ही सामाजिकता है। यथार्थवादियों के अनुसार सामाजिक गुणों का विकास ही सामाजिक उद्देश्य है ।

राजनैतिक दृष्टि से सामाजिक विकास के केवल दो रूप है। एकतंत्रीय शासन-प्रणाली में राष्ट्र ही महत्वपूर्ण है । हमारे देश में एकतंत्रीय शासन प्रणाली में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को समाज से और राष्ट्र से और राष्ट्र को व्यक्ति एवं समाज के प्रति कर्तव्यों से अवगत कराना था। लेकिन पश्चिम में यह विकास दूसरे रूप में विकसित हुआ। इनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने राष्ट्र के लिए पैदा होता है. इसे राष्ट्रीय समाजवाद कहते है । राष्ट्र के हित के लिए व्यक्ति को अपने हित का त्याग करना चाहिए। द्वितीय महायुद्ध से पहले तक जर्मनी, इटली और जापान ने इस सिद्धान्त को माना था । उस समय उनकी शिक्षा व्यवस्था राष्ट्र के अनुसार नागरिक तैयार करती थी। इसके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को अपने शासन के अनुसार करने योग्य बनाना था ।
सामाजिक विकास का दूसरा रूप लोकतांत्रिक है। इसके अनुसार राष्ट्र की उनति के लिए योग्य नागरिकों पर निर्भर करता है। अतः शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य योग्य नागरिक का निर्माण करना है। योग्य नागरिक को अपने

अधिकारों तथा कर्तव्यों का ज्ञान हो और जिसका चारित्रिक, शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास हो गया हो। योग्य नागरिक में राष्ट्र-प्रेम की भावना होना अति आवश्यक है। सहयोग से काम करने में विश्वास हो तथा दूसरों के हितों के लिए अपने हित का त्याग करने की प्रवृत्ति हो; उसी से समाज या देश के हित को अपेक्षा की जा सकती है ।

स्पष्ट है कि शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है । लेकिन समाज के सामने या राष्ट्र के हित के लिए व्यक्तिगत उद्देश्यों को दरकिनार नहीं किया जा सकता है। व्यक्ति भी समाज का ही अंग है । उसो प्रकार समाज का विकास प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर करता है।

4.**7 शिक्षा के वैयक्तिक एवं सामाजिक उद्देश्यों में समन्वय** (Co-ordination between Individual and Social **Objectives of Education**)

शिक्षा के व्यक्तिगत तथा सामाजिक ठद्देश्यों पर विचार के उपरान्त हम पाते हैं कि दोनों को उग्र रूप में मान्यता नहीं मिला है । न ही व्यक्ति के लिए समाज तथा न ही समाज के लिए व्यक्ति को भुलाया जा सकता है। दोनों के समन्वय से जो उद्देश्य निकलकर आता है वही उत्तम उद्देश्य है ।

हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था करनी चाहिए, जिसमें न तो समाज स्वतंत्र हो और व्यक्ति को अपना दास बना सके; और न व्यक्ति इतना स्वतंत्र हो जाय कि वह सामाजिक निरोम को ठुकराकर अपनी मनमानी कर सके। इस शिक्षा व्यवस्था में व्यक्ति और समाज की स्वतंत्रता सोमा में रहनी चाहिए; जिससे दोनों का विकास और कल्याण हो सके। **मैकाइवर एवं पेज ने** कहा है कि सामाजोकरण एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

4.**8 शिक्षा के विभिन्न लक्ष्य/उद्देश्य (Various Aims /Objectives of Education)**-दार्शनिक, समाज-सुधाकर तथा शिक्षाशास्त्रियो ने व्यक्ति तथा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षा के विभिन्न उद्देश्योंको निर्धारित करना आवश्यक था ।आधुनिक भारत में शिक्षा के उद्देश्यों से पूर्व इन सभी उद्देश्यों का अध्ययन करना परम आवश्यक है । ये हैं-

(i)**ज्ञानार्जन उद्देश्य (Aims of knowledge** Aequisition)-इस उद्देश्य के प्रतिपादक सुकरात, अरस्तू, दांते, कमेनियस तथा बेकन आदि आदर्शवादी विद्वानों ने किया है ।इस उद्देश्य के अनुसार ज्ञान के बल से ही व्यक्ति का विकास होता है तथा वह अपने जीवन में सुख और शांति का अनुभव करता है ।अतः ज्ञानार्जन उद्देश्य का शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण उद्देश्य है ।इसके अंतर्गत (i)ज्ञानार्जन अथवा विद्या (knowledge for the sake of knowledge)तथा मानसिक विकास (Mental Development) दोनों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है ।

(ii) सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य (Aim of Cultural Development)- कुछ विद्वानों ने अनुसार शिक्षा का उद्देश्य संस्कृति का विकास एवं उन्नति होना चाहिए। अलग-अलग स्थान तथा काल में सस्कृति शब्द बदल जाता है । कुछ देशों में किसी विशेष भाषा की निपुणता ही संस्कृति माना गया है, जैसे-भारत में संस्कत का ज्ञान प्राप्त करना, इगंलैड में फ्रेंच तथा लैटिन भाषाओं का ज्ञान ही संस्कृति रामझ जाता था। सकुथित अर्थ में संस्कृति का तात्पर्य विशेष आदतों, रहन-सहन तथा बोलने-चलने के ढंग एवं आचार-विचार आते है । व्यापक अर्थ में सस्कृति का अभिप्राय सर्वोच्च विचारों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें दैनिक जीवन प्रयोग करना है। संस्कृति का अर्थ संमूर्ण सामाजिक सम्पति (Social Heritage) से है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है ।

(iil**) चरित्र विकास का उद्देश्य (Aim of Character** Development)-चरित्र का विकास प्रमुख तक्षयं में एक है। पति पर मल देने बालों में जर्मन शिक्षाशास्त्री हरबार्ट (Herbart) का नाम प्रमख का अर्भ-" आंतरिक देवता भी

एकता है। हरयाट का तात्पर्य नैतिक चरित्र से है। व्यक्ति तथा समाज केसावर तथा स्थापित कल्याण उच्च कोटि के नैतिक चरित्र से ही सम्भव है। मनुष्य की जन्मजात शक्तियाँ समाज में अमावस्या उत्पन्न करता है। अतः शिक्षा का उद्देश्य मानव की प्रवृत्तियों का परिमार्जन करके आचरण को नैतिक बनाना है। हरबार्ट के अनुसार, पाठ्यक्रम में उन विषयों को प्रमुखता मिलना चाहिए, जो नैतिक तथा धार्मिक विचारों से भरे हुए हो;; जैसे-इतिहास, साहित्य आदि ।

(**iv) जीविकोपार्जन का उद्देश्य अथवा व्यावसायिक उद्देश्य (Aim** of **Vocational)-कुछ** विद्वानों अनुरागर शिक्षा का उद्देश्य व्यावसायिक होना चाहिए, क्योंकि वर्तमान में मनुष्य के समक्ष आजीविका एक प्रमुख समस्या है । ऐसी शिक्षा-व्यवस्था व्यर्थ है, जिसमें व्यक्ति पढ़-लिखकर अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं न कर सकें। माता-पिता एवं शिक्षक के साथ-साथ सरकार भी व्यावसायिक शिक्षण पर बल देते हैं। इसके अलावा अलग-अलग स्थानों पर मनोवैज्ञानिक केन्द्र खोले जा रहे हैं जहाँ पर बालकों की रुचियों, अभिरुचियों, योग्यताओं तथा आवश्यकता को जाचकर ,उन्हें नौकरियों तथा व्यवसायों के लिए उचित मार्ग दर्शाया जाता है ।

(V)**सम विकास का उद्देश्य (Harmonious Development Aim)** -शिक्षा के समविकास का उद्देश्य बालक की शारीरिक ,मानसिक, भावनात्मक, कलात्मक तथा नैतिक गुणों का समान रूप से विकास करना है। यह उद्देश्य मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। शिक्षा मनोविज्ञान यह मानता है कि प्रत्येक बालक कुछ जन्मजात शक्तियों को लेकर जन्म लेता है, उसके संतुलित विकास के लिए इन सभी शक्तियों का विकास समान रूप से किया जाना आवश्यक है। **रूसो तभा पेस्टालॉजी (Rousseau and Pestalozzi**) मुख्य रूप से इसके समर्थक रहे । रूसो ने समविकास पर प्रकाश आते हुए कहा है कि, "हमारे अंगों एवं शक्तियों का स्वाभाविक विकास प्रकृति की शिक्षा की रचना करता है ।" *"(The spontaneous development of our organs and faculties constitutes the education of nature.")

(vi) नागरिकता का उद्देश्य (Citizenship Aim) समाजवादियों के अनुसार जनतंत्र में बालक को सच्या, ईमानदार तथा कर्मठ नागरिक बनाना परम आवश्यक है। अत: नागरिकता के उद्देश्य पर बल देना आवश्यक है। नागरिकता के विकास के लिए बौद्धिक, नैतिक तथा सामाजिक गुणों की आवश्यकता होती है । इसके अनुसार शिक्षा की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि प्रत्येक बालक में ये सभी गुण उसकी रुचियों, योग्यताओं तथा समताओं के अनुसार विकसित हो जायें।

(vii) पूर्ण जीवन का उद्देश्य(TheCompleteLivingAim)
जिन शिक्षा शास्त्रियों द्वारा शिक्षा का उद्देश्य जीवन को पूर्णता प्रदान करने पर जोर दिया। जिसमें **हर्बट स्पेंसर (Herbert Spencer**) प्रमुख हैं। स्पेंसर का कहना है कि व्यक्ति का विकास किस अमुक क्षेत्र में न होकर सर्वांगीण होना चाहिए। अत: उसने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति जीवन के विभिन्न अंगों का विकास इस प्रकार होना चाहिए कि वह अपने भावी जीवन की समस्त समस्या को आसानी से सुलझा सके।

(**viii) शारीरिक विकास का उद्देश्य (Aim of Physical** Development) कुछ शिक्षाशास्त्रिया ने शारीरिक विकास को शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य बताया है। शारीरिक विकास का तात्पर्य स्वस्थ, सुन्दर, सुदृढ तथा बलवान बनाना होता है। प्राचीन तथा मध्यकालीन इतिहास में अनेकों देशों की शिक्षा इस मान्यता पर आधारित यो । प्राचीन राज्य ग्रीस के स्पार्टा में इसे ही मुख्य उद्देश्य माना गया था। प्लेटो तथा रूसो जैसे प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री भी अपनी शिक्षा योजनाओं में शारीरिक विकास पर बल दिया था। **रेवेल** ने भी लिखा है कि"स्वास्थ्य के बिना जीवन ,जीवन नहीं है । यह केवल स्फूर्तिहीनता तथा वेदना की दशा है, मृत्यु का प्रतिरूप है ।"
(**ix) अवकाश उपयोग का उद्देश्य (Aim of Leisure Utilization**) अवकाश का अर्थ है फुरसत का समय अथवा ऐसा समय जिसमें व्यक्ति जीविकोपार्जन संबंधी कार्य नहीं करता है। **रंगनाथन (Ringanathan) के** अनुसार,

"अवकाश का तात्पर्य ऐसे समय से है जिसमें व्यक्ति अपनी शारीरिक, आर्थिक, स्वास्थ्य संबंधी तथा आध्यात्मिक शक्तियों के वशीभूत होकर किसी कार्य को न करे ।"

कुछ शिक्षाशास्त्रियो के अनुसार अवकाश के समय का सदुपयोग करना ही शिक्षा का उद्देश्य माना है। उनका कहना है कि शिक्षा न हमें केवल जीविकोपार्जन के लिए तैयार करती है, बल्कि अवकाश के समय का सदुपयोग करना भी सीखाती है।

(**X) अनुकूलन का उद्देश्य (Adjustment Aim)-कुछ** विद्वानों का मत है कि शिक्षा का उद्देश्य बालक में ऐसा अनुकूलन क्षमता (Adjustment Capacity) विकसित करना है इस उद्देश्य के समर्थक मुख्य रूप से प्राणीशास्त्री है। इनके अनुसार संसार के प्रत्येक प्राणी को जीवित रहने के लिए सदैव संघर्ष करना पडता है जो प्राणी इस संघर्ष में सफल हो जाता है वह जीवित रहता है।

(**xi) आत्माभिव्यक्ति का उद्देश्य (SELF-Expression as Aim)** -व्यक्तिवादी विचारकों ने आत्माभिव्यक्ति अथवा आत्म-प्रकाशन का समर्थन किया है। आत्म प्रकाशन का अर्थ है मूल प्रवृत्तियों को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करना । इस उद्देश्य के अनुसार बालक की मूल प्रवृत्तियों को विकसित किया जाना तथा स्वतंत्र रूप से व्यक्त करना है ।यह तभी संभव है जब समाज में ऐसी स्वतंत्रता, रीति रिवाज तथा परिस्थितियां हो,जिनकी सहायता से बालक अपना काम, जिज्ञासा तथा आत्म गौरव आदि जन्मजात प्रवृत्तियों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता हो ।

(**xii)आत्मानुभूति का उडेश्य(Self-realizationAim)**
आत्मानुभूति या आत्मबोध का अर्थ है - प्रकृति, मानव तथा परमपिता परमेश्वर को समझना । कुछ विदानों के अनुसार शिक्षा का उद्दश्य बालक का आत्मिक विकास करना है। तभी बालक अपने सर्वोत्तम गुण की अनुभूति कर सकेंगे । **रास (J.S.Ress)** के शब्दों में , "आत्मानुभूति में आत्मा का अर्थ, वर्तमान असंतोषजनक एवं अनुशासनहीन आत्मा नहीं, अपितु भविष्य की पूर्णतः परिवर्तित आत्मा है ।"(The Self-realization is not the present unsatisfactory or undisciplined self but the potential fully developed self that is to be.")

अब तक हमने शिक्षा के विभिन्न उडेरयों को विस्तार से देखा और अब हम शिक्षा का उदेश्य जनता के लिए जानेगे ।

4.**9 . जनतांत्रिक देश के लिए शिक्षा का लक्ष्य (Aim of Education for Democratic Country like** India)

भारत 15 अगस्त, 1947 को आजाद हुजा तथा 26 जनवरी, 1950 को इसका अपना संविधान लागू हुआ । हमारे संविधान के प्रारम्भ में प्रस्तावना दी गई है, जिसमें उदद्यों एवं लक्ष्यों को स्पष्ट किया गया है। इस प्रस्तावना से स्पष्ट है कि इसमें लोकतंत्र (Democracy), धर्मनिरपेक्ष (Secular), समाजवादी (Socialistic) तथा अखण्डता (Integrity), राष्ट्रीय एकता (National Integration) आदि राष्ट्रीय लक्ष्य है।

उपरोका लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए भारत में शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया जा सकता है ।

(i)**लोकतंत्रीय नागरिकता का विकास (Development of Democratic Citizenship)-लोकतंत्रमें नागरिकों** पर समाज का दायित्व होता है, जिसे निभाने के लिए सशक्त रूप से नागरिकता का विकास होना आवश्यक है। **माध्यमिक शिक्षा आयोग** के अनुसार, लोकतंत्र में नागरिकता एक चुनौतीपूर्ण दायित्व है ,जिसके लिए प्रत्येक नागरिक को प्रशिक्षित किया जाता है। इसमें बहुत से बौद्धिक, सामाजिक तथा नैतिक गुण निहित हैं, जिनके

अपने-आप विकसित होने की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।" नागरिकों में इनके विकास के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक मामलों में अपना स्वतंत्र निर्णय करना होगा ।व्यक्ति तभी ऐसा कर सकते हैं जब उसमें लोकतांत्रिक नागरिकता के गुणों का विकास किया जाये ।एक योग्य नागरिक में समझदारी एवं बौद्धिक सत्यनिष्ठ होना चाहिए, जिससे वह असत्य से सत्य तथा तथ्यों को चुन सकें ।उसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होना चाहिए, जिससे वे वस्तुपरक ढंग से सोच सकें तथा तथ्यों के आधार पर संयमित तथा विवेकपूर्ण ढंग से निर्णय ले सके। उन्हें अपने मस्तिष्क को सदैव खुला रखना चाहिए, ताकि वे नवीन विचारों को ग्रहण कर सके तथा प्राचीन तथा नवीन विचारों सही सामंजस्य (Coordination) बना सकें । योग्य नागरिक उक्त बौद्धिक गुणों के साथ सामाजिक एवं नैतिक गुणों का होना भी आवश्यक है। उनमें अनुशासन, सहयोग, सामाजिक संवेदनशीलता तथा सहिष्णुता का विकास किया जाना चाहिए, क्योंकि अनुशासन, सफल सामूहिक कार्य के लिए, सहयोग सफल व्यतीत करने के लिए परमावश्यक है । सामाजिक संवेदनशीलता सामाजिक न्याय तथा अच्छे चरित्र की आधारशिला है । लोकतंत्र के अस्तित्व को कायम रखने के लिए सहिष्णुता परमावश्यक है। शिक्षा-आयोग के शब्दों में " लोकतंत्र स्थायित्व के लिए त्यागपूर्ण एवं सूक्ष्म नेतृत्व, आत्म-नियंत्रण, सहनशीलता, पारस्परिक सद्भाव, दूसरों के प्रति आदर जैसे मूल्यों का विकास नागरिकों में होना आवश्यक है ।

(ii)**उत्पादिता में वृद्धि करना (To Increase the Productivity**- खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर रहना देश के लिए अनिवार्य दशा है । परन्तु भारत में इसकी कमी से गरीबी, बेरोजगारी तथा अनुपयुक्त रोजगारों की भी समस्याएं हैं। अत: शिक्षा को उत्पादिता से जोड़ना अति आवश्यक है। इसे ध्यान में रखकर भारत में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में व्यावसायिक कुशलता का विकास होना चाहिए और शिक्षा और उत्पादिता के बीच संबंध स्थापित किया जा सकता है।

(iii**) सामाजिक तथा राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति (Achievement of** Social and National Integration)-भारत में शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में एक देश में सामाजिक तथा राष्ट्रीय एकता स्थापित करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कोठारी आयोग ने सुझाव दिया कि किसी-न-किसी प्रकार की सामाजिक तथा राष्ट्रीय संवा सभी छात्रों के लिए अनिवार्य किया जाए । यह सेवा नागरिकों में अनुशासन के साथ-साथ चरित्र निर्माण का भी साधन बनती है। यह शारीरिक श्रम क साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित करती है। इसके अलावा राष्ट्रीय चेतना के कार्यक्रम को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे बच्चा अपनी सांस्कृतिक विरासत को समझ सकें।

(iv**) देश का आधुनिकीकरण करना (TO Modernise the** Country) देश के शिक्षा उद्देश्यों में देश का आधुनिकीकरण करना भी है। वर्तमान समाज का विज्ञान तथा तकनीकी पर आधारित बनाना, जिससे दिन-प्रतिदिन हो रहे अनुसंधान का जीवन में सफल उपयोग किया जा सके। इन अनुसंधान स्वरूप प्राचीन परम्पराओं, मान्यताओं तथा दृष्टिकोणों में परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों के कारण नव-समाज का निर्माण हो रहा है। हमें भी वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान का विकास करके औद्योगिक क्षेत्र में उन्नति करते हुए अपनो सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं, मान्यताओं एवं दृष्टिकोणों में परिवर्तन लाना चाहिए और इन सब में शिक्षा अपना महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

(**v) सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करना** (To Develop Social, Moral and Spiritual Values)-शिक्षा-आयोग के अनुसार उपरोक्त गुणों के साथ-साथ नागरिकों में सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का विकास भो परम आवश्यक है। आयोग ने अपने प्रतिवेदन में लिखा भी है कि "भारत में विज्ञान तथा आत्मा-संबंधों मूल्यों को निकट एवं संगति में लाने का प्रयास करना चाहिए जो सम्पूर्ण मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा, न कि उसके व्यक्तित्व के किसी खण्ड विशेष का ।"अतः सामाजिक, नैतिकता तथा आध्यात्मिक मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए, तभी हम सही मायने में शिक्षा की महत्ता को बरकरार रखा सकेंगे ।

4.**10 सारांश (Summary)** प्रस्तुत पाठ में शिक्षा के उद्देश्य की गई है। यह बताने का प्रयास किया गया कि जिन गुणों तथा मूल्यों के आधार पर शिक्षा व्यवस्था का का निर्माण किया जाना है। अगर यह पूर्ण निर्धारित हो तभी उसके आधार पर पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा सकता । इस पाठ में, शिक्षा के उद्देश्य का महत्व तथा उसकी आवश्यकता जानने के बाद शिक्षा का उद्देश्य निर्धारित करने के आदर्शवादी तथा यथार्थवादी आधारों की चर्चा की गई है। मानव एक सामाजिक प्राणी है, परन्तु वह व्यक्ति-विशेष भी है। अत: मानव के शिक्षा को निर्धारित करने के क्रम में शिक्षा कितनी सामाजिक तथा कितनी वैयक्तिक है, इस पर भी गहन चिंतन से यह तथ्य उभर कर आया कि दोनों के बीच समन्वय कर शिक्षा योजनाए बननी चाहिए। शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों के अन्तर्गत ज्ञानार्जन उद्देश्य, सांस्कृतिक उद्देश्य, चारित्र विकास, जीविकोपार्जन या व्यावसायिक उद्देश्य, समविकास उद्देश्य, नागरिकता, पूर्ण-जीवन शारीरिक विकास, अवकाश उपयोग अनुकूलन, आत्माभिव्यक्ति तथा आत्मानुभूति उद्देश्य पर भी चर्चा की गई, जो शिक्षा के उद्देश्यों के माध्यम से शिक्षा के विभिन्न आयामों को दर्शाता है ।अंत में भारत जैसे जनतांत्रिक देश के लिए शिक्षा के उद्देश्य के अन्तर्गत भारत के सम्पूर्ण समाज के विकास की आदर्श स्थिति के लिए शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार किया गया, जो अत्यन्त ही उपयोगी है।

इस प्रकार निश्चित है शिक्षा उद्देश्यों की व्याख्या छात्रों को सही दिशा निर्धारित करने में अपना योगदान दे सकेगा । अत: यह पाठ छात्रों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी।

4.**11अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise**)

1. शिक्षा का उद्देश्य क्यों आवश्यक है? इसके निर्माण का आधार बताएं। (Why aims of Education is important ? Explain its basis of formulations

2. शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों के अन्तर को स्पष्ट कीजिए। इनके गण क्या है?

(Differentiate between the individual and Social Aims of Education. What are their respective values and limitations)

3. क्या शिक्षण के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में समन्वय स्थापित करना संभव है ?यदि हां तो कैसे?

(Is it possible to establish a balance between the Individual and Social Aim Education ? If so, how?

4. "वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्य एक-दूसरे के पूरक हैं।" इस कथन की व्याख्या कीजिए । ("Individual and Social Aims are complementary to each other." Elucidate)

5.शिक्षा के कौन-कौन से उद्देश्य है? आप किस उद्देश्य को पसंद करते हैं और क्यों ? (Which are the aims of Education ? Which aims you did like and why ?)

6.भारत में उभरते हुए लोकतंत्र में शिक्षा के क्या उद्देश्य होने चाहिए और क्यों ?

(What should be the aims of education in the emerging democracy of Indian and why ?)